om-13 final_Page 1 and 2 07-10-2014 20:59 Page 4

विघ्न एक लिफ्ट...

- ब्र.कु.सूर्य...माउण्ट आबू

भगवान जैसी सर्वशक्तिवान सत्ता को पाकर भी विघ्नों से डरें - कैसी उपहास जनक बात है। जिसके साथ स्वयं भगवान हो, जो भगवान के बल पर जीते हों, जिनके ऊपर विश्व-रक्षक की छत्र-छाया हो, वो भी अगर छोटे-छोटे विघ्नों से डरें, तो इस संसार की निर्बल आत्माओं को विघ्नमुक्त भला कौन करायेगा! विश्व में जलती हुई विकारों की अग्नि में, अशांत और दु:खी आत्माओं को भला सांत्वना कौन देगा!!

आओ, आज हम सभी मिलकर, विघ्नों को फूंक मार कर उड़ा देने की प्रतिज्ञा करें। हम स्वयं की शक्तियों को पहचानें और वायदा करें कि - हम न कभी तूफानों से घबरायेंगे, और न ही कभी दूसरों के मार्ग में कांटे बोयेंगे। क्योंकि जैसे हम अपना रास्ता साफ देखने की कामनायें रखते हैं, दूसरे भी वैसी ही कामना रखते हैं।

बात कुछ वर्ष पूर्व की है। मैंने मन में कुछ उदासी-सी महसूस की और लगा कि मैं विघ्नों के बोझ से दबा जा रहा हूँ। निवारण के लिए मैंने बाबा के कमरे में प्रवेश किया। कुछ देर वहां बैठकर मैं स्वयं को अति हर्षित और हल्का महसूस करने लगा। मैंने स्वयं से पूछा - 'बाबा के कमरे में जाने से क्या हुआ, जो तुम हर्षित और हल्के हो गये?' और मैंने जाना कि बाबा के सम्मुख बैठकर, बाबा के दिव्य स्वरूप को देखकर, मुझे पुन: स्मृति आ गई कि 'तुम कौन हो।' 'तुम किसके बच्चे हो?' 'तुम्हारा साथी कौन है?' तुम बस इतनी-सी छोटी बात से परेशान हो गये! मानो मुझे बाबा कह रहे थे - बेटा, तुम्हें तो सभी की उदासी मिटानी है.... तुम उदास क्यों... तुम्हें तो सभी के बोझ उतारने हैं, तुम बोझिल क्यों। अर्थात् बाबा से मिलकर, मुझें स्वयं की शक्तियों की, स्वयं की महानताओं की और स्वयं के कर्त्तव्यों की स्मृति आ गई, जिससे मैं स्वयं को अति शक्तिशाली आत्मा महसूस करने लगा और मुझे स्वयं पर ही हंसी आने लगी कि अरे, तू इतना महान होकर छोटी बातों में विचलित हो गया।

बस वो दिन और मैंने जान लिया कि इन सब विघ्नों का रहस्य स्वयं की शक्तियों की विस्मृति है। तब से मैं स्वयं की इन स्मृतियों को बढ़ाने लगा। बस, इन स्मृतियों से विघ्न, विघ्न महसूस नहीं होते। सोचता हूँ कि जब भगवान स्वयं कहता है - 'मेरे बच्चे, मैंने तुम्हें सर्व शक्तियों का वरदान दे दिया है, फिर मैं अपनी शक्तियों में संशय क्यों करता हूँ।'

तुमने ये रास्ता अनेकों बार तय किया है - बाबा के ये बोल मन में धीरज दे देते हैं और हमें निश्चय हो जाता है कि विजय हमारी निश्चित है। मैंने गहराई से देखा - कि आखिर भी इन विघ्नों का कारण क्या है? मनुष्य स्वयं ही इनका कारण है या अन्य लोग विघ्न पैदा करते हैं?

हमें इतना महान्, सत्य, दिव्य और सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त होने पर भी, हम विघ्नों के वश क्यों हो जाते हैं क्योंकि ज्ञान का मनन नहीं करते। मनन करने से बुद्धि दिव्य और शक्तिशाली हो जाती है और विघ्नों को सहज ही पार कर लेती है।

मैंने पाया - विघ्नों का रचयिता मनुष्य स्वयं ही है। दूसरों को दोषी ठहराना यथार्थ नहीं। मनुष्य या तो जीना नहीं जानता या अपने चिड़चिड़े स्वभाव से या सीमित विचारों से स्वयं ही अपने मार्ग में कांटे बोता रहता है। मैंने देखा है कि जब कोई भी ऐसी बात सामने आती है तो मनुष्य उसके बहुत विस्तार में चला जाता है। यह क्यों हुआ...., ऐसे नहीं होना चाहिए....., आदि-आदि.... विस्तार ही विघ्नों का कारण है। विस्तार में जाने से आत्मा की शक्ति क्षीण हो जाती है और उसमें सामना करने का बल नहीं रह जाता और फलस्वरूप छोटा-सा विघ्न भी पहाड़ महसूस होने लगता है। इसलिए समस्याओं के विस्तार के स्थान पर ज्ञान की गहराई में जाओ तो ज्ञानबल से विघ्न स्वत: ही समाप्त हो जायेंगे।

बात सन् 1972 की है, जबकि मेरा पूरा ध्यान केवल योगाभ्यास पर ही था। ज्ञान-मनन को मैं इतना महत्व नहीं देता था। मुझे अव्यक्त बाबा ने कहा - 'ज्ञान-मनन भी किया करो। मैंने बाबा से पूछा, 'इसकी क्या आवश्यकता है? जबकि सम्पूर्णता अर्थात् संपूर्ण योग, तो क्यों न योग को ही निरन्तर किया जाए?' बाबा ने उत्तर दिया - नहीं, आगे चलकर जब योग में विघ्न आयेंगे, तो ज्ञान-मनन का बल विघ्नों को शीघ्र काट देगा।

उस दिन से मेरा ध्यान ज्ञान-मनन जैसे आनंद दायक विषय की ओर भी आकर्षित हुआ। और मैंने पाया कि हमें इतना महान्, सत्य, दिव्य और सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त होने पर भी, हम विघ्नों के वश क्यों हो जाते हैं क्योंकि ज्ञान का मनन नहीं करते। मनन करने से बुद्धि दिव्य और शक्तिशाली हो जाती है और विघ्नों को सहज ही पार कर लेती है। योग मार्ग में जब विघ्न आते हैं तो हम योग को स्थिर नहीं रख पाते, योग में द्वन्द्व हो जाता है। परन्तु अगर ज्ञान का बल भी साथ हो तो सहज ही विघ्नों को हटाकर हम योग-युक्त रह सकते हैं।

हम, अपने मार्ग में आने वाले विघ्नों का कारण गहराई से जानें। कारण न जानने के कारण ही हम डोलायमान होते हैं। भक्ति मार्ग में प्रचलित एक कहानी इस बात को थोड़ा स्पष्ट कर देगी। एक महात्मा एकांत में बैठकर योग-अभ्यास किया करते थे, परन्तु वो महात्मा ज़रा भी उत्तेजित नहीं होते थे। एक दिन साथ रहने वाले शिष्य ने पूछा - 'महात्मन, यह मूर्ख रोज आपकी तपस्या में विघ्न डालता है, आप इसे क्यों कुछ भी नहीं कहते? महात्मा जी मुस्कराते हुए बोले - बेटा, पिछले जन्म में यह मनुष्य मेरा पड़ोसी था और मैं इसे खूब परेशान किया करता था, अब इस जन्म में वह बदला ले रहा है। इसलिए यह जानते हुए कि यह विघ्न मेरे ही पूर्व जन्मों के कारण है मैं इसे शांति से सहन करता हूँ। इसलिए विघ्नों को शांति और धैर्य से निभाना चाहिए, अधिक प्रश्नों या विघ्नों की चिन्ताओं में नहीं जाना चाहिए क्योंकि अधिकतर विघ्न हमारे कर्मों के कारण ही आते हैं।

राजनीति में राजयोग.... पेज 1 का शेष

जो ईश्वरीय शक्ति का ही परिणाम है। इनसे हमें यही सब कुछ सीखना है। थोकचंद मेनिया,सांसद मणिपुर,एच.आर. डी. स्टैंडिंग कमिटी के सदस्य ने कहा कि अभी-अभी हम सभी ने महसूस किया कि किस प्रकार से योगाभ्यास के द्वारा आध्यात्मिक सशक्तिकरण होता है। यह काफी राहत देने वाला है। ब्रह्माकुमारी बहनें राजनेताओं की सेवा करना चाहती हैं ताकि वे संसार की सेवा कर सकें। यहां की आध्यात्मिकता से हमारे नेतृत्वता में निखार आयेगा। आम आदमी पार्टी, दिल्ली शासन के पूर्व कानून मंत्री सोमनाथ भारती ने कहा कि यहाँ एक अभूतपूर्व प्रयोग जारी है इस प्रयोगशाला में, वह है राजयोग का ध्यानाभ्यास। यह प्रयोग अगर सफल रहा तो भारत की राजनीति का कल्याण होगा। मैं राजनीति के आध्यात्मीकरण का पक्षधर हूँ। यहाँ करीब दस लाख ब्रह्मचारी हैं - यह एक अद्भुत बात है। राजनीति एवं राजनीतिज्ञों के आध्यात्मीकरण से ही होगा देश का कल्याण। बिहार से आये राजनीतिज्ञ अनिल जी ने भी अपने उद्गार रखे। ज्ञानसरोवर की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. सुमन ने योगाभ्यास करवा कर शांति एवं आनंद की अनुभूति करवायी। ओ.आर.सी. की निदेशिका ब्र.कु.आशा ने कार्यक्रम का संचालन किया। पूर्व विधायक ब्र.कु.मोहन पटेल ने अपना अनुभव सुनाया।

चण्डीगढ़। हरियाणा के माननीय मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. उत्तरा।

चण्डीगढ़। पंजाब व हरियाणा उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के.सी. पुरी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. कविता।

राजसमंद-राज.। जिला कलेक्टर कैलाश चन्द वर्मा को राखी बांधते हुए ब्र.कु. पूनम।

दिल्ली-दिलसाद गार्डन। राखी बांधने के पश्चात् समूह चित्र में डॉ. मोहर,डायरेक्टर,हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन,ई.डी.एम.सी., डॉ. सुरेन्द्र,एडिशनल डी.एच.ए., डॉ. एन.दास, डॉ. एस. बत्रा, डॉ. ममता, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. तनुजा तथा ब्र.कु. डॉ. गौरव अग्रवाल।

दिल्ली-हरिनगर। राखी बांधने के पश्चात् समूह चित्र में लेफ्टिनेंट जेनरल ओम प्रकाश, ब्र.कु. शुक्ला, ब्र.कु. सुंदरलाल, लेफ्टिनेंट कर्नल बी.सी. सती तथा अन्य।

फतेहाबाद-हरियाणा। विधायक प्रहलाद सिंह गिलाखेड़ा,चीफ पार्लियामेंट सेक्रेट्री,हरियाणा सरकार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.सीता।

अंबिकापुर-छ.ग.। रामसेवक पैकरा,गृहमंत्री छ.ग. को राखी बांधते हुए ब्र.कु. विद्या।

आणंद-गुज.। कृषि विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ. एन.सी. पटेल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. वैशाली।

नरकटियागंज-बिहार। बाल विकास आयोग की सदस्या अपर्ना सिंह को '7 बिलियन एक्ट्स ऑफ गुडनेस' कार्यक्रम में आमंत्रित करते हुए ब्र.कु. अबिता।